JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ऐतिहासिक धरोहर की जीवंतता प्रदान करने में 'लिख दूँ पाती यादों के गलियारे से' पुस्तक का योगदान

Pujaben Bharatbhai Chauhan
Ph. D students
Shree Govind Guru University, Godhra(Vinzol)

इतिहास का सामान्यतया अर्थ होता है, भूतकाल की घटनाओं का चित्रण। भूतकाल की ऐसी घटना, व्यक्ति, स्थान, चित्र आदि का व्यक्तिगत महत्व को निर्देशित किया गया हो उसे 'इतिहास' कहा जाता हैं। इतिहास की कई घटनाएँ नकारात्मक व सकारात्मक दोनों हो सकती है। व्यक्ति या समाज अपने देश का इतिहास की जानकारी प्राप्त करके उस देश या समाज की दिशा-दशा में सुधार या विकास कर सकता है। किसी भी देश या समाज का विकास करने के लिए उस देश या उस समाज के इतिहास को जाना आवश्यक हो जाता है।

संस्कृत के इतिहास के शब्द को समजिए तो इति यानी की बाद की, हास यानी हुआ हो। अतीत में जो हुआ है उसे इतिहास कह सकते है। उसे अंग्रेजी में हिस्ट्री कहा जाता है। हर देश या समाज का कोई न कोई इतिहास अवश्य होता ही हैं। भारतीय इतिहास अत्यंत प्राचीन एवं गौरवशाली रहा है। कहा जाता है कि भारत देश दक्षिण अफ्रीका से जुड़ा हुआ था। भौगोलिक गतिविधि और पृथ्वी के प्लेट की खिसकने के कारण भारत का जो हिस्सा था वह तैरते हुए एशियाई देश के साथ जुड़ गया और जिस स्थान पर समुद्र था वहाँ दो जमीन के स्तर की टकरावट के कारण हिमालय का निर्माण हुआ। यह ऐतिहासिक घटना भी एक भारतीय इतिहास को गौरविन्त करती है। भारत में कई राजाओं ने सुशासन किया हैं। उसकी सत्य कथाएँ पुराणों में भी मिलती हैं। कई विदेशी राजाओं ने भारत में आक्रमण किया था। जिन्होंने भारत जैसे समृद्ध राष्ट्र का नाश करने हेतु कई पुस्तकालयों को जला दिया था। जिसका इतिहास आज भी मौजूद है। भारत का इतिहास समृद्ध एवं गौरवशाली रहा है। कई भारतीय राजा-महाराजा, कई विदेशी राजा महाराजा और अंग्रेजों ने भारत पर शासन किया। भारत के विकास में स्थापत्य कला, मूर्ति कला, वस्तु कला, स्तूप आदि के निर्माण में इतिहास के अनेक राजाओं का योगदान रहा हैं।

इतिहास लेखन की सर्वप्रथम शुरुआत 'हेरोडोटस' ने ग्रीक में की थी। हिंदी साहित्य का इतिहास सौप्रथम फ्रेंच भाषा में गार्सा-द-तासी ने 'इस्तवार द ला लितरेत्यूर ऐन्दूई ऐन्दूस्तनी' लिखा था। वर्तमान समय में आ. रामचन्द्र शुक्ल का 'हिंदी साहित्य का इतिहास प्रामाणिक माना जाता है।

डॉ. सूरज सिंह नेगी वर्तमान समाज में चल रही समस्या को ध्यान में रखकर अपनों के बीच की बढ़ रही संवादहीनता, संवेदनशून्यता एवं रिश्तों में बढ़ रही दूरियाँ को दूर करने के लिए सन् 2018 में 'पाती अपनों को मुहिम' के अंतर्गत पत्र-लेखन विधा को जीवंत बनाने के साथ सामाजिक समस्याओं को दूर करने का निस्वार्थ प्रयास किया है। उन्होंने विविध विषय पर पत्र प्रतियोगिताओं का आयोजन करके प्राप्त पत्रों मे से चयनित पत्रों को सम्पादन कार्य किया हैं। 'लिख दूँ पाती यादों के गलियारे से' पुस्तक का संपादन डॉ. सूरज सिंह नेगी, डॉ. मीना शिरोला, चन्द्रमोहन उपाध्याय के द्वारा किया गया है। जिसमें चयनित नब्बे पत्र के जरिए तीनों लेखक ने विशेष जानकारी प्रदान की। जिसमें से मैंने ऐतिहासिक धरोहर को जीवंतता प्रदान करने वाले चयनित पत्रों के जरिए अपने विचार को अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। जो सुधी पाठकजन को विस्तृत जानकारी प्रदान करने के साथ ऐतिहासिक धरोहर की जीवंतता भी प्रदान कर सकेगा।

1. कमलापति महल

अंजलि खेर ने कमलापति महल के बारे में पत्र लिखा है। भोपाल से पचास कि.मी दूर गिन्नौरगढ़ में राजा निजामशाह अपनी सात रानियों के साथ रहते थे। उनमें से उन्हें रानी कमलापति अधिक प्रिय थी। रानी सुंदरता के साथ-साथ राजकीय कार्य में भी बुद्धिशाली थी। वह अपने राज्य की उन्नति और विकास के लिए कई योजनाओं का निर्माण किया था। जिसके कारण पूरे भारत में रानी प्रसिद्ध हो जाती है। राजा अपनी प्रिय रानी के लिए भोपाल में सन् 1722 में छोटी झील के ऊपर सात मंजिल का महल बनाते हैं। जिसे बनाने में लाहौर की लाहौरी ईंटों का उपयोग किया गया। यह महल कमल की पँखुड़ियों के आकार का लगता था। वहाँ छोटी झील की तरफ ऐसा कमरा था जहाँ गर्मी में राहत प्राप्त करने के लिए पानी छोड़कर बारिश जैसा माहौल बनाया जाता था। इस महल का प्रतिबिंब पानी में जहाज जैसा पड़ता था जिसके कारण उसे 'जहाज महल' भी कहा जाता था।

एक दिन राजा निजामशाह का भतीजा चैनशाह संपत्ति के लिए राजा को खाने में जहर दें देता है। जिसके कारण राजा की मृत्यु हो जाती है। रानी पति की मृत्यु के बाद भोपाल महल में आ जाती है। वह मोहम्मद खान को पति के हत्यारे को करने के लिए कुछ पैसे का वादा करती है। काम हो जाने पर रानी कमलापति पैसे नहीं दे पाती। जिसके कारण मोहम्मद खान महल पर राज करने हेतु रानी का बेटा नवलशाह के साथ युद्ध करता है। जिसमें रानी का बेटा मर जाता है। बेटे की मृत्यु के बारे में जानकर रानी महल के बाँध खुलवा देती है। जिसके कारण पाँच मंजिल तक पानी भर जाता है। दो ही मंजिल पानी बगैर रहती हैं। उसमें रानी कमलापति राजसी सामान व अन्य रानियों के साथ जल समाधि लेकर अपने चरित्र का रक्षण करती है। रानी कमलापति के साहस की शौर्य गाथा को जीवंत रखने के लिए भोपाल के हबीबगंज स्टेशन का नाम सन् 2021 से रानी कमलापति स्टेशन पड़ा है।

2. कोसली गाँव

अनिल कुमार यादव ने हरियाणा राज्य के रेवाड़ी जिले से 35 कि.मी दूर आए कोसली गाँव की जानकारी दी है। कोसली गाँव को 'सैनिकों की नगरी' के रूप में जाना जाता हैं। इस गाँव में अक्सर बेटे का जन्म होने पर हर माँ कहती है कि मेरा बेटा सेना में कप्तान बनेगा। जिसके कारण हर घर में वीर सैनिक है। जिनकी शौर्य गाथा आज भी भारत में गायी जाती है। इस गाँव के स्थान पर घना जंगल था। यहाँ बाबा मुक्तेश्वरपुरी तपस्या कर रहे थे। तभी इस रास्ते से राजा कौशल गुजर रहे थे। रात हो जाने के कारण इस जंगल में ही उन्होंने विश्राम लिया। तब बाबा मुक्तेश्वरपुरी ने उन्हें इसी गाँव बसने की लिए कहते हुए आशीर्वाद दिया कि "तुमसे इस गाँव को कोई जीत नहीं सकेगा और तुम्हें कोई हरा नही सकेगा।"[1] बाबा के कहने पर राजा ने सन् 1193 में कौशल सिंह ने कौशल गाँव बसाया था। कई राजाओं ने आक्रमण किए पर हार गए। कौशल गाँव में 'बाबा मुक्तेश्वरी' नाम का मठ बनाया गया है। यहाँ हर साल होली का उत्सव मनाया जाता है। इस गाँव की शौर्य गाथा की शुरुआत पहले विश्व युद्ध सन् 1914 से इस विश्व युद्ध में नव वीर सैनिक शहीद हुए थे। दूसरे विश्व युद्ध सन् 1939 में इस गाँव के 247 वीरों ने भाग लिया था। जिसमें से 12 सैनिकों को अपनी बहादुरी दिखाने के कारण अंग्रेजों ने सेवा में अफसर बनाया था। भारत देश को आजादी दिलाने में इस गाँव के वीरों का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। इस गाँव के वीरों ने प्रथम और द्वितीय युद्ध, प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, 1962 के भारत-चीन युद्ध, 1965 एवं 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध और कारगिल युद्ध में भाग लिया था। इस गाँव के वीरों ने ब्रिगेडियर, कर्नल, लेफ्टिनेंट कर्नल और तीनों सेनाओं के उच्च पद को सुशोभित किया हैं। आज यह गाँव हरियाणा का सबसे बड़ा विधानसभा का क्षेत्र रहा है। जिसमें 138 गाँव आते हैं।

[1] 'लिख दूँ पाती यादों के गलियारे से' पृ- 28

3. फरीदाबाद

डॉ. इन्दु गुप्ता ने फरीदाबाद के बारे में लिखा है। यह शहर ऐतिहासिक स्मारकों एवं मंदिरों से भरा हुआ हैं। यह शहर सन् 1607 में जहाँगीर के खजाँची बाबा फरीद ने बनाया था। इस शहर बनाने के पीछे यहाँ से गुजरने वाले यात्रियों की रक्षा करने का उद्देश्य रहा था। फरीद ने इस शहर में एक किला, एक तालाब और एक मस्जिद बनवाई थीं। राजा नाहरसिंह के पूर्वज राजा राव बलराम ने बल्लभगढ़ के मुख्य बाजार में मुख्य सड़क पर भव्य किले का निर्माण किया था। जिसे राजा 'नाहरसिंह किला' या 'बल्लभगढ़ किला' के रूप में जाना जाता हैं। जिसमें से हरियाणा सरकार ने छः कमरों का वातानुकूलित कक्षों, रेस्तरां, बार, लाऊंज, आँगन उद्यान के साथ सुंदर महल में बदल दिया हैं। जहाँ शादी, प्रदर्शन आदि आयोजन होता हैं।

फरीदाबाद के तिलपत गाँव में श्री कृष्ण के भक्त तिलपत आए थे। यह भूमि पांडवों से जुड़ी हुई है जिसके कारण यहाँ पांडवों की पूजा की जाती हैं। संत सूरदास के आशीर्वाद के कारण यहाँ की भूमि समृद्ध है। सूरदास के अंतिम संस्कार की राख लाकर उनकी समाधि इस गाँव में बनाई गई थी। यहाँ मंगलवार पर मेला लगता है। संत सूरदास फरीदाबाद के सीही गाँव में जन्मे थे। यहाँ उनका स्मारक भी है। सूरदास ने सात वर्ष की उम्र में घर त्याग करने बाद वल्लभाचार्य से शिक्षा-दीक्षा ली थी। प्रत्येक वर्ष की मई को उनकी जन्म जयंती मनाई जाती है।

4. मुंबई

उमा वर्मा 'वेदना' ने मुंबई के बारे में लिखा है। सिटी ऑफ ड्रीम मुंबई महाराष्ट्र की राजधानी है। मुंबई का नाम मुम्मा देवी के नाम पर से बना है। यह शहर अरब सागर के किनारे सात द्वीप मिलकर बना हैं। अंग्रेजी शासन काल में अंग्रेजों ने 'गेटवे ऑफ इंडिया' सबसे प्रसिद्ध इमारत का निर्माण करवाया था जो आज भी मौजूद है। यह इमारत ब्रिटन की महारानी के स्वागत में सन् 1924 में बनाई गई थी, जिसे भारत का प्रवेशद्वार भी कहा जाता है। यहाँ मरीन ड्राइव व चौपाटी प्रसिद्ध है। जहाँ लाखों पर्यटक घूमने आते हैं। यहाँ पर कई फिल्म की शूटिंग भी होती हैं।

5. धर्मराजेश्वर मंदिर

ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' ने धर्मराजेश्वर के मंदिर के बारे में लिखा है। धर्मराजेश्वर मंदिर राजस्थान और मध्यप्रदेश की सीमा के नजदीक में स्थित इंडियन रोक कट आर्किटेक्चर का उत्तम और श्रेष्ठ मंदिर माना जाता है। जो मंदसौर जिले के शामगढ़ तहसील में आया है। यह चंदवासा गाँव से 3 कि.मी. दूर जंगल में धर्मराजेश्वर का मंदिर आया है। इस मंदिर में एलोरा की तरह 50 गुफाएँ हैं। पत्थर को तराश कर यह गुफाएँ बनाई गई हैं। जो एक उत्कृष्ट कला, दूरदर्शिता, धैर्य और उन्नत प्रतिभा का द्योतक माना जाता है। यह मंदिर का सौंदर्य देखकर पता चलता है कि प्राचीन भारतीय वास्तुकला उन्नत व वैज्ञानिक रही होगी। यह मंदिर की वास्तुशैली कैलाश मंदिर के वास्तुशैली के आधार पर बनीं हुई है। प्रतिहार राजाओं की रुचि इस मंदिर में देखने मिलती हैं। यह मंदिर में शिवलिंग और विष्णु भगवान की मूर्ति है जो बोलती हो ऐसा आभास होता हैं। पहले विष्णु मंदिर था बाद में उसे शिव मंदिर में तब्दील किया गया है। इस मंदिर के आसपास सात लघु मंदिर है। यह मंदिर वास्तुकला की श्रेष्ठ भवन निर्माण शैली में बना मंदिर है।

6. जैसलमेर

नीलम सपना शर्मा ने जैसलमेर पर पत्र लिखा है। राजस्थान का प्राचीन शहर के साथ सबसे बड़ा मरुस्थल जैसलमेर के स्थापक यदुवंशी भाटी के वंशज रावल जैसल के द्वारा सन 1178 में स्थापना की गई थी। यह वंश का शासन 770 वर्ष चला। स्वतंत्रता के बाद इस शहर का विलीनीकरण हो गया। आज यह स्थान पर भाटी राजपूत और जैन धर्म के श्वेतांबर लोग अधिक रहते हैं। यहाँ 12वीं और 15वीं सदी के मंदिर और सुंदर हवेलियाँ आज भी मौजूद हैं। अब यह स्थल पर्यटन का स्थल बन गया है। यहाँ रेगिस्तान पर सूर्य की किरणें पड़ने पर सोने के कण पड़े हो ऐसा लगता है। यहाँ अक्टूबर से मार्च विंटर फेस्टिवल चलता है। जैसलमेर में शीशमहल कला का अद्भुत नमूना है।

7. पुष्कर

प्रदीप कुमार जोशी ने पुष्कर के बारे में लिखा है। पुष्कर सरोवर विश्व प्रसिद्ध पवित्र सरोवर में से एक माना जाता है। यहाँ सब दर्शन व स्नान करके पुण्य प्राप्त करते हैं। यहाँ महर्षि विश्वामित्र ने विश्व के कल्याण की कामना के लिए तपस्या करके गायत्री मंत्र की रचना की थी। पुष्कर सरोवर के पास ब्रह्मा का मंदिर है। जो विश्व में एकमात्र मात्र ब्रह्मा का मंदिर है। कार्तिक महीने में पुष्कर में मेला भरा जाता है। जहाँ देश-विदेश से कई लोग आते हैं। जहाँगीर द्वारा आयोजित पशुओं का मेला आज त्यक्खी मेला के रूप में बनाया जाता है।

8. जयपुर

प्रभा पारेख ने जयपुर शहर पर पत्र लिखा है। जयपुर शहर क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा शहर है। यह शहर सँ 1728 में महाराजा जयसिंह ने बसाया था। उनके नाम के आधार पर इस शहर का नाम जयपुर पड़ा था। वह राजस्थान की राजधानी है। जयपुर विश्व के दस शहरों में गिना जाता हैं। इस शहर की स्थापत्य कला और भवन निर्माण की कला बेजोड़ हैं। वहाँ के पुराने मंदिर, भवनों, महलों का निर्माण छौलपुरी गुलाबी पत्थरों से किया गया हैं। सन् 1876 में महाराजा सवाई रामसिंह ने इंग्लैंड की महारानी एलिजाबेथ व प्रिंस ऑफ वेल्स राजकुमार एल्बर्ट के स्वागत में पूरा शहर गुलाबी रंग से रंगवा दिया था। जिसके कारण यह शहर को 'गुलाबीनगरी' कहा जाता है। यह शहर कई रूप में विकसित हैं। इस विकसित शहर की सड़के, बाजार, रजाई, जूती, जरी काम, सोने-चाँदी काम, मूर्ति कला के लिए यह शहर सुप्रसिद्ध हैं। आज भी जयसिंह की याद में विशालकाय जयघोष टॉप सुरक्षा करती नजर आती है। जयपुर में आमेर का किला, हवामहल, सरगासूली, तालकोटा, जंतर-मंतर, गोविन्द मंदिर, एल्बर्ट हॉल आदि पर्यटन स्थल हैं।

9. मुंगेर गाँव

दिल्ली से थोड़ी दूर स्थित मुंगेर गाँव आया है। वहाँ का चंडी स्थान मुंगेर का प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। महाभारत के कर्ण जिस अंगदेश का राजा था वही देश 'मुंगेर' है। कर्ण महादानी था। वह सुबह गंगा में स्नान कर के गरम तेल के कड़ाहे में कूद जाता था। माँ गंगा उसकी भक्ति से खुश होकर उसे जीवन देने के साथ-साथ कडाहे के तेल जितना सोना भी देती थी। यह सोना महल के सामने कर्ण चौरा पर बैठकर सबको दान देता था। एक दिन कर्ण का यह घटनाक्रम एक लालची व्यक्ति ने देख लिया तो दूसरे दिन वह कर्ण से पहले गंगा स्नान करके गरम तेल के कड़ाहे में कूद पड़ता है। यह देखकर माँ गंगा बहुत क्रोधित हुई और कडाहे को उलट दिया। कर्ण जब यह देखता है तब वह माँ गंगा से माफी मांगने लगा। जिसके कारण गंगा प्रसन्न होकर कर्ण को यशस्वी होने का आशीर्वाद देते हुए जो व्यक्ति सच्चे मन से प्रार्थना करेंगे

उसकी इच्छा पूरी होने का वरदान देती है। आज भी यह कड़ाहा मौजूद है। यहाँ चंडी मंदिर भी है। वहाँ के पंडितों का मानना है कि जब सती मायके में अपने पति का अपमान देखकर हवन कुंड में कूद गई थी। तब शिवजी सती का जला हुआ शरीर लेकर विचलित होकर यहाँ-वहाँ घूम थे तब यहाँ सती की बाई आँख गिरी थी। इसलिए यह मंदिर में माता को चांदी की बड़ी आँख के रूप में स्थापित किया गया है।

संदर्भ

1. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/
2. 'लिख दूँ पाती यादों के गलियारे से', संपादक- डॉ. सूरजसिंह नेगी, डॉ. मीना सिरोला, चन्द्रमोहन उपाध्याय , प्रकाशन- साहित्यागार 2023
3. वहीं- पृ-28
4. गूगल सर्च